भूगोल का पाठ्यक्रम

शिक्षण-प्रक्रिया के अर्न्तगत शिक्षक, विद्यार्थी तथा विषय-वस्तु अथवा पाठ्यक्रम तीन बातें प्रमुख रूप से आती हैं। शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम के अनुसार ही शिक्षा दी जाती है। पाठ्यक्रम छात्रों तथा समाज की आवश्यकता के अनुकूल ही होना चाहिए तथा उसे शिक्षा या विषय के उद्देश्यों की पूर्ति होनी चाहिए।

① भूगोल के पाठ्यक्रम निर्माण में सबसे प्रथम बात यह है कि 'मनुष्य तथा उसके प्राकृतिक वातावरण सम्बन्धी सम्बन्धों को स्पष्ट करना' पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए। इससे प्रत्येक छात्र को वह ज्ञान प्राप्त हो जाए, जिसकी आवश्यकता उसे इस संसार में प्रभावशाली ढंग से रहने के लिए है।

शिक्षक को भूगोल-शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए, तभी पाठ्यक्रम का निर्माण उचित प्रकार से हो सकता है।

② भूगोल में पाठ्य-वस्तु तीन प्रकार से संगठित की जा सकती है:-

(अ)- विशेष प्रदेश के विषय में।
(ब)- विशेष प्रकार की मानव क्रियाओं के विषय में,
(स)- विशेष प्रकार की प्राकृतिक वातावरणों के विषय में।

इस सिद्धान्त के अनुसार, भूगोल में पाठ्य-वस्तु का चयन तथा संगठन इस प्रकार किया जाय कि हर विकास-स्तर पर कुछ भौगोलिक प्रकरण छात्रों के समक्ष रखे जा सकें।

पाठ्य-वस्तु का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए, प्रत्यक्षीकरण सामग्री का उपयोग अधिक हो। दूसरी आवश्यक बात यह है कि छात्रों की कल्पना-शक्ति को जागृत करना चाहिए कि विभिन्न भौगोलिक वातावरणों में मानव स्वयं को किस प्रकार अपने जीवन को मोड़ लेता है।

प्राचा.
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

भूगोल की समस्त पाठ्य-सामग्री को सापेक्षिक कठिनाई के अनुसार क्रम में रखना चाहिए। प्रादेशिक, मानव क्रिया-कलाप तथा प्राकृतिक वातावरण इन तीन क्रमों के अनुसार ही पाठ्य-वस्तु का चयन होना चाहिए। इसमें से दो बातों का ध्यान रखना चाहिए

① बच्चों के पूर्व ज्ञान को हम कहाँ तक जाग्रत कर सकते हैं।

② बच्चो के मूर्त रूप में कहाँ तक हम तथ्य या विचारों को प्रदान कर सकते हैं।

प्रसिद्ध भूगोलवेत्ताओं के अनुसार ~~भूगोल-शिक्षण के उद्देश्यों के~~ भूगोल के पाठ्यक्रम निर्माण में निम्नांकित सिद्धान्त ध्यान में रखने चाहिए-

① - भूगोल के पाठ्यक्रम के निर्माण में भूगोल-शिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए। जब भूगोल-शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट होंगे तो पाठ्यक्रम निर्माण हो सकता है और वर्तमान पाठ्यक्रम का मूल्यांकन भी किया जा सकता है।

② - व्यापक पाठ्यक्रम द्वारा 5 वर्षों में माध्यमिक स्कूल का पाठ्यक्रम पूर्ण हो जाना चाहिए। बच्चों की शिक्षा में जिन क्षेत्रों का अधिक महत्व है, उनको अधिक विस्तृत रूप में पढ़ाना चाहिए। बच्चे अपने गृह-प्रदेश के विषय में भली-भाँति जानकारी रख सके और दूसरे देशों के विषय में जो इससे सम्बन्ध रखते हैं, जानकारी प्राप्त कर सकें। एक-दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन भी छात्र भली प्रकार कर सकें।

③ - सापेक्षिक कठिनाई के अनुसार पाठ्यक्रम की क्रमबद्धता।

④ - भूगोल के विभिन्न भाग; जैसे- प्राकृतिक भूगोल, भूगोल, आर्थिक भूगोल का आपस में सम्बन्ध। रुचि का केन्द्र एक प्रदेश ही होना चाहिए और

इस प्रदेश के प्राकृतिक जलवायु आर्थिक पहलुओं को समझना चाहिए।

(5)- भूगोल को स्कूल के दूसरे विषयों के सम्बन्ध के विषय में भी ध्यान रखना चाहिए।

(6)- गृह-प्रदेश तथा संसार प्रदेश में सम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए।

(7)- पाठ्यक्रम में क्रियात्मक कार्य के लिए बच्चों को अवसर देना चाहिए।

(8)- पाठ्यक्रम में छात्रों को दुहराने के लिए अवसर देना चाहिए।

उपर्युक्त सिद्धान्तों के आधार पर पाश्चात्य भूगोलवेत्ताओं ने प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में निम्नांकित पाठ्यक्रम रखने का सुझाव दिया है।

(A) प्राथमिक (प्राइमरी) स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम:- इस स्तर पर छात्रों को भौगोलिक ज्ञान से परिचित कराना है, और ग्यारह वर्ष की अवस्था पर छात्रों को अधिक ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता के लिए हुए छोड़ देना है। प्राइमरी स्तर पर यह आशा करना कि छात्र क्रमबद्ध रूप से कार्य कर सकें, अधिक उचित नहीं होगा उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नांकित पाठ्यक्रम उचित होगा।—

(1)- स्थानीय पड़ोस में प्रारम्भिक निरीक्षण, ऋतुओं और सूर्य का निरीक्षण भी इसमें सम्मिलित है।

(2)- घर, स्कूल और पड़ोस के नक्शे बनाना और स्थानीय छः इंच शीट का प्रयोग।

(3)- मातृदेश के कुछ चुने हुए व्यक्तियों और वस्तुओं के जीवन-विषय के बारे में बतलाना।

(4) दूसरे देशों की ओर दृष्टिपात- इनमें निम्नांकित विधियों का प्रयोग किया जा सकता है—

(i) भौगोलिक खोजों का इतिहास -

(ii) वह देश जो हमारा वस्त्र, भोजन पैदा करते हैं।

(iii) दूसरे देश के बच्चों का जीवन।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय

② माध्यमिक विद्यालय का पाठ्यक्रम :-

पहला वर्ष :- माध्यमिक कक्षायों में बालकों का भूगोल का शिक्षण संकेन्द्रीय विधि से देना चाहिए इस विधि के अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालयों का पाठ्यक्रम निम्नलिखित होना चाहिए।

प्रथम वर्ष :- संसार का आरम्भिक सर्वे।
द्वितीय वर्ष :- संसार का प्राकृतिक भूगोल की दृष्टि से अध्ययन।
तृतीय वर्ष :- संसार का जलवायु तथा वनस्पति।
चतुर्थ वर्ष :- संसार का आर्थिक भूगोल, भोजन, कच्चा माल, बाजार तथा आवागमन के साधन।
पंचम वर्ष :- अन्तिम रूप से संसार का सर्वेक्षण जिसमें पहले पांच वर्ष का किया हुआ कार्य सुसंगठित हो सके और विशेष रूप से भारत की संसार में स्थिति।

प्रकरण (Topic) यह पाठ्यक्रम कुछ चुने हुए प्रसंगो से सम्बन्ध रखता है - पाठ्यक्रम की वास्तविक योजना प्रसंगानुसार होती है।

① स्थानीय जनपद से सम्बन्धित विषय :- उद्योग, उद्यम, सामाजिक और ऐतिहासिक विषय।
② मनुष्यों की आवश्यकताओं से सम्बन्धित विषय- भोजन, जल, वस्त्र तथा उद्योगों के लिए कच्चा माल, यातायात के साधन आदि।
③ आधुनिक घटनाओं से उत्पन्न जिनका भौगोलिक महत्व हो।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

स्विस मनोवैज्ञानिक इमली मरमी के अनुसार बच्चों और किशोरों में पढ़ाई को समझने की तीन क्रमिक अवस्थाएँ होती हैं -

(क) अविशिष्ट सम्पूर्णता की दृष्टि -
(प्राथमिक स्कूल में - आयु 6-8 से 10-11 तक)

(ख) औपचारिक भौगोलिक दृष्टि -
(मिडिल स्कूल या माध्यमिक स्कूलों के निचले वर्गों में - आयु 10-11 से 14-15 वर्ष तक)

(ग) सही वैज्ञानिक दृष्टि
(माध्यमिक स्तर के ऊँचे वर्गों में - आयु 14-15 से 18-19 वर्ष)।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

भौगोलिक संकल्पनाएँ :

प्राथमिक स्कूल में :- इनमें से प्रथम चरण अवस्था-क्रम (तिथि-क्रम से) मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बचपन का तीसरा चरण है अर्थात स्कूल प्रवेश की आयु। इस आयु में बच्चा भौगोलिक तथ्यों और अभौगोलिक तथ्यों का अन्तर समझ में नहीं पाता है, अतः इस उम्र में भूगोल का अलग पाठ के रूप में नहीं पढ़ाया जाय।

प्रारम्भिक पढ़ाई के अन्तिम वर्ष में बच्चों के पास भूगोल का आधारभूत शब्द-संग्रह हो सकता है। वे अपने क्षेत्र और देश-विदेश की प्रमुख विशिष्टताएँ सीख सकते हैं हालांकि इस समय तक कम या ज्यादा ये विचार अनुभवजन्य होते हैं, और बुद्धि के धरातल पर उसे बाद की उम्र में ग्रहण करते हैं।

प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को लिखना-पढ़ना और गणित की मूल-प्रक्रिया को सिखाना है, तथा कुछ मूल मानसिक संकल्पनाएँ जगाना है। भूगोल इसके अनिवार्य कर्तव्य के रूप में, बच्चों का कारण और प्रभाव का ज्ञान और प्रकाश की धारणा को समझाना है;

भूगोल में बच्चों को स्थानों की स्थिति निर्धारण करने, स्थानों की परस्पर दूरी की गणना-तुलना करने की शिक्षा मिलती है, चाहे वे स्थान उसने प्रत्यक्ष देखे हो या नक्शे में। ये अभ्यास वैसे बहुत सरल लेकिन बहुत शिक्षात्मक है। इससे प्राथमिक स्तर पर ऐसे भूगोल- शिक्षण को निर्विवाद स्थान मिलता है।

निम्न और उच्च माध्यमिक स्कूलों में-

निम्न स्तर पर ग्यारह वर्ष के बच्चो में भूगोल के प्रति अच्छी समझ होती है। वे विशिष्ट विवरण से सामान्य विचारों की ओर अग्रसर होते रहते है। उनकी दृष्टि को भौगोलिक कहा जा सकता है।

इसकी शिक्षा की अवस्था किशोरावस्था है। यह कुछ छात्रों के लिए कठिन अवस्था होती है, क्योंकि इसमें ऐसी सक्रिय घड़ियां होती है, जिनके साथ-साथ अपने में वृद्धीकरण और प्रत्याहार की करने की शक्ति उत्पन्न होती है, जिनके यह ऐसी अवस्था है, जिसमें बुद्धि प्रधान होने लगती है। भूगोल को इस अवस्था में बच्चे के तार्किक विचार और संश्लेषण के विकास में सहायक होना है; क्योंकि वह निरन्तर उन विचारों को बुद्धि में मनन कर घोंटता है, जिन्हें उसने ग्रहण तो पहले ही किया था लेकिन उनमें विभेद नहीं कर सका था।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया